

लहर

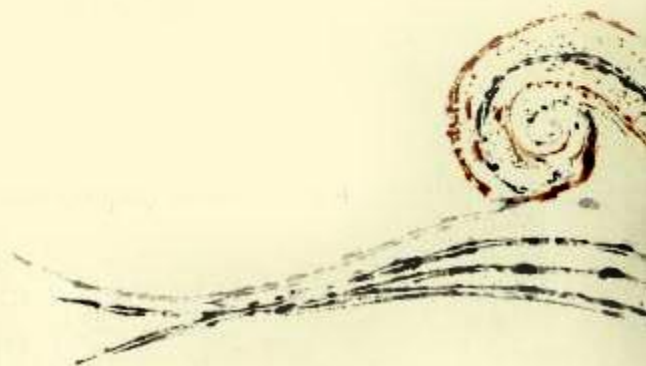


मार्गरेट, चित्र : ब्लेयर, हिंदी : विदूषक

बच्चों और बड़ों दोनों को ऐसी कहानियां पसंद आती हैं जिनमें ज़िन्दगी और प्रकृति के तत्व बुने हों। “लहर” एक इसी तरह की कहानी है। मूलतः यह एक जापानी लोक-कथा है।

एक बूढ़ा आदमी है जो उम्र और विवेक का प्रतीक है। उसका पोता युवा और साहसी है। फिर एक भयंकर तूफ़ान आता है, एक ऊंची लहर पूरे गाँव को निगल जाना चाहती है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है हम दादाजी को खुद अपना खेत जलाते हुए देखते हैं। तब हमें उस बूढ़े आदमी की गरिमा का पता चलता है। वो प्रकृति के प्रकोप को, प्रकृति के उपहारों से ही काबू पाता है।

इस मौखिक लोककथा को पीढ़ियों से एक कहानी-वाचक ने दूसरे कहानीकार को सुनाया है। अब यह कहानी मार्गरेट सुनारही हैं।



लहर



मार्गरेट, चित्र : ब्लेयर, हिंदी : विदूषक







बहुत पुरानी बात है. जापान में एक गाँव समुद्र के बिल्कुल किनारे बसा था. जब समुद्र शांत होता तो बच्चे समुद्र की मंद और सुन्दर लहरों में खेलते. बच्चे लहरों को देखकर चिल्लाते और हँसते. पर कभी-कभी तूफ़ान आता और तब लहरें गुस्से में आतीं और ऐसा लगता जैसे वो पूरे गाँव को ही निगल जायेंगी. तब हर कोई - बूढ़ा हो या बच्चा, सब लोग जल्दी से अपने-अपने घरों में जाकर छिप जाते. वे घरों के दरवाज़े बंद करते और तूफ़ान के ख़त्म होने और समुद्र के दुबारा शांत होने का इंतज़ार करते.



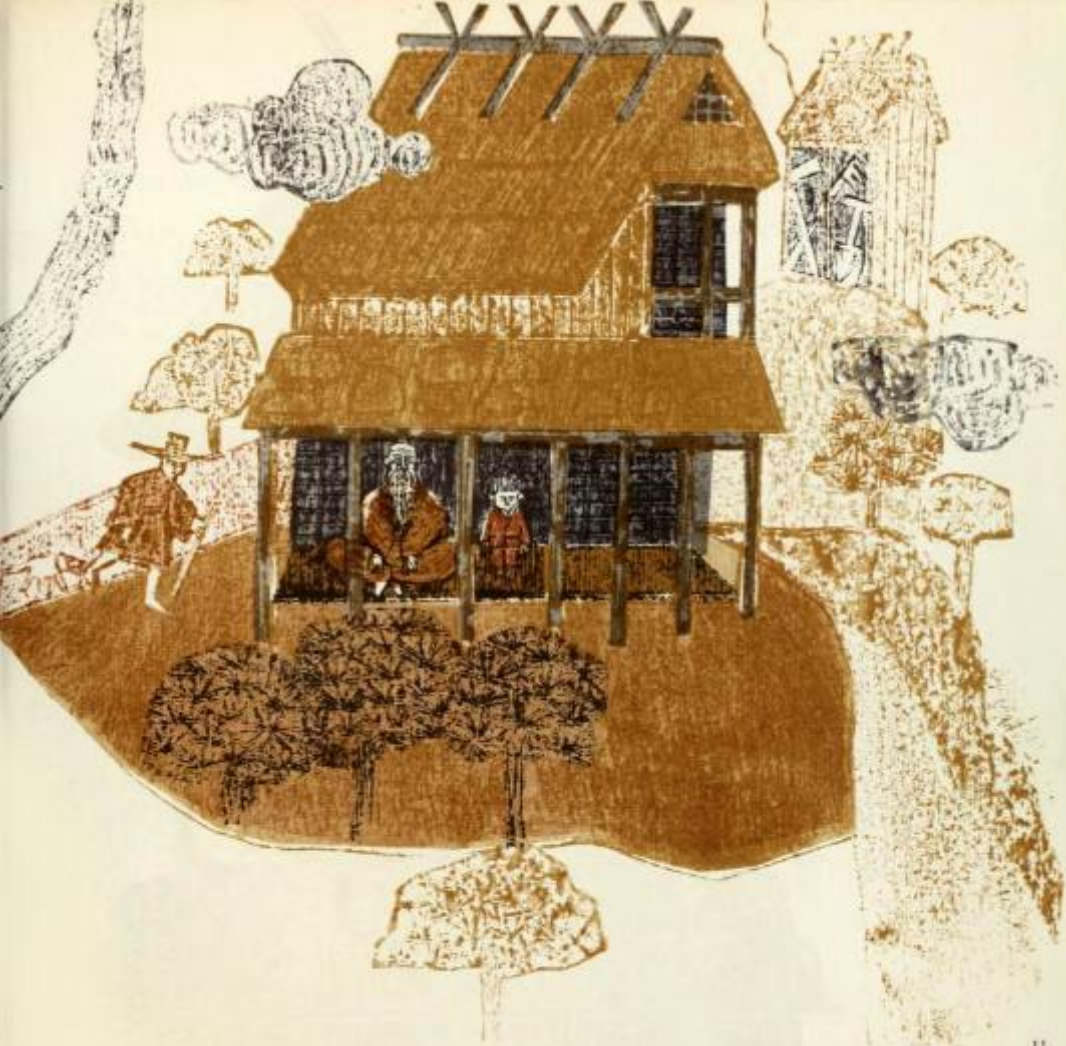
गाँव के पीछे ही एक पहाड़ था. गाँव से पहाड़ की ओर एक सड़क जाती थी. सड़क ऊँची-नीची थी और उसके दोनों ओर धान के खेत थे. धान के खेत ही लोगों की असली पूँजी थी. लोग अपने खेतों में बहुत मेहनत से काम करते थे. वे वसंत की बारिश में तर-बतर हो जाते थे. अपने श्रम से वो पहाड़ी को सुन्दर और हरा-भरा बनाते थे. कड़ी धूप में भी लोग चढ़ाई चढ़कर अपने खेतों की देखभाल करते. जब धान पककर सुनहरा हो जाता, तो लोग आपस में मिलकर धान की कटाई करते और खुशियाँ मनाते क्योंकि अब वो पूरे साल भर आराम से खा सकते थे.

उस पहाड़ पर - गाँव और समुद्र के ऊपर एक समझदार बूढ़ा आदमी रहता था. उसका नाम ओजिसान था - जापानी में उसका मतलब दादाजी था. ओजिसान के साथ उसका युवा पोता रहता था. पोते का नाम था - तडा.



तडा को ओजिसान से बहुत प्रेम था. तडा अपने दादाजी ओजिसान का उनकी उम्र और विवेक, दोनों के लिए आदर करता था. असल में पूरा गाँव ही ओजिसान का बहुत आदर-सम्मान करता था. अक्सर लोग ऊँची-नीची सड़क से पहाड़ी पर चढ़कर आते सिर्फ ओजिसान की राय लेने!



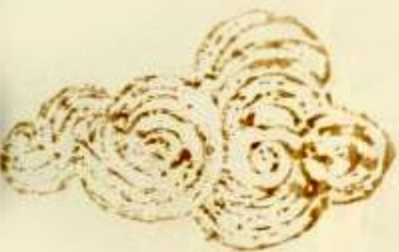




एक दिन जब हवा बहुत गर्म और शांत थी, तो ओजिसान अपनी छत पर खड़ा अपने धान के खेतों को देख रहा था। उसका बहुमूल्य धान अब पक चुका था और कटाई के लिए बिल्कुल तैयार था। उसे बाकी गांववालों के धान के खेत भी दिखे। खेत पहाड़ से नीचे जा रही सीढ़ियों के दोनों तरफ स्थित थे।

पहाड़ के नीचे उसे गाँव भी दिखाई दिया जहाँ नब्बे कच्चे घर बने थे। वहाँ पर खाड़ी के पास, एक मंदिर भी था। उस साल धान की बहुत अच्छी फसल हुई थी और इसलिए गांववाले उसकी खुशी में मंदिर के आँगन में एक उत्सव का आयोजन करने वाले थे।

तडा भी अपने दादाजी के पास आकर खड़ा हो गया। वो भी पहाड़ी के नीचे देखने लगा।



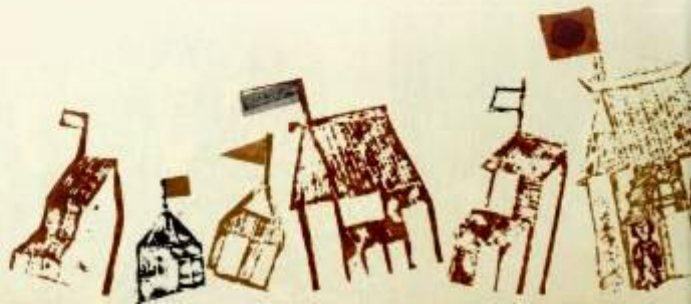


उन्हें नीचे कागज़ की बनी बहुत सी लालटेनें बांस के खम्बों से लटकी हुई दिखीं. सभी घरों से उत्सव के झंडे लटके थे. क्योंकि हवा एकदम शांत और गर्म थी इसलिए वो झंडे हिल नहीं रहे थे.

“मौसम बिल्कुल भूकंप वाला लगता है,” ओजिसान ने कहा.



फिर उसके कुछ देर बाद ही के भूकंप आया! भूकंप इतना तीव्र नहीं था जिससे तडा डरता, क्योंकि जापान में वैसे भी बहुत भूकंप आते हैं. पर यह भूकंप कुछ अलग था - लम्बा, हल्का हिलने वाला, जैसे समुद्र की तलहटी में कोई जोरदार बदलाव आ रहा हो. भूकंप में उनका घर कई बार हल्के से हिला. फिर सब कुछ पहले जैसे ही शांत हो गया.

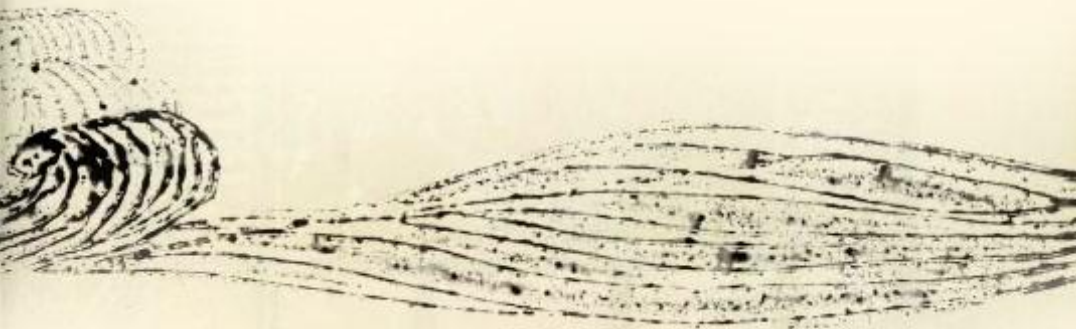


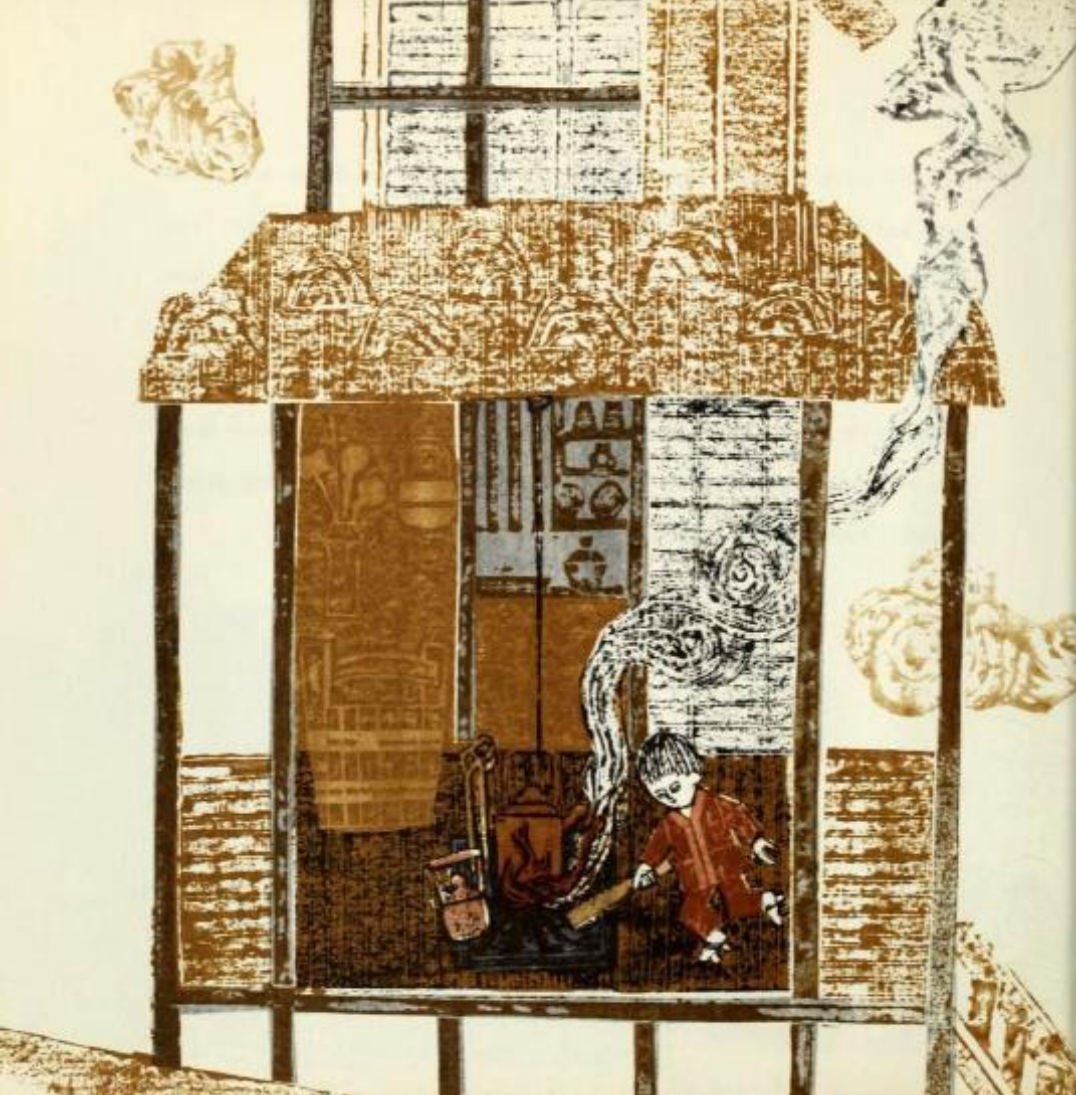




भूकंप खत्म होने के बाद ओजिसान ने अपनी बूढ़ी आँखों से समुद्र-तट को देखा. पानी का रंग बहुत तेज़ी से गहरा हो रहा था. धीरे-धीरे करके समुद्र गाँव को निगल रहा था. समुद्र-तट की सकरी पट्टी धीरे-धीरे, चौड़ी और ज्यादा चौड़ी हो रही थी. *समुद्र, अब तेज़ी के साथ ज़मीन से दूर भाग रहा था.*

ओजिसान और तडा को मंदिर के पास छोटे-छोटे लोग दिखे. लोग सड़कों पर और समुद्र के किनारे भी इकट्ठे थे. उत्सव से पहले सब गांववाले मिलकर समुद्र-तट पर इकट्ठे हो रहे थे. जैसे-जैसे समुद्र पीछे हटा वैसे-वैसे वो रेत के टीले और नंगे पत्थरों पर समुद्री-खरपतवार छोड़ता गया. इसका क्या हश्र होगा, क्या नतीजा होगा? वो किसी भी गांववाले को अभी समझ में नहीं आया था.





पर ओजिसान अनुभववी था. उसे पता था. उसकी ज़िन्दगी में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था. पर उसके दादाजी ने ऐसी घटनाओं के किस्से उसे बचपन में सुनाए थे. उसे पता था कि अब समुद्र अपना रौद्र रूप दिखाएगा. वो खतरे की यह चेतावनी गाँववालों को तुरंत देना चाहता था.

गाँव तक सड़क द्वारा यह सन्देश भेजने का समय ही नहीं था. लोगों को आगाह करने के लिए मंदिर के पुजारी से वो जोर-जोर से घंटा बजाने को कैसे कहता? अब खड़े रहकर सोचने तक का वक्त भी नहीं बचा था. ओजिसान को तुरंत ही कुछ करना था! उसने तडा से कहा, “जल्दी करो! मुझे तुरंत एक जलती हुई लकड़ी लाकर दो!”

तडा ने तुरंत आदेश का पालन किया. वो दौड़ा हुआ घर में गया और चीड़ की एक टहनी को जलाकर लाया. उसने वो जलती लकड़ी ओजिसान को पकड़ाई.



उसके बाद वो बूढ़ा आदमी अपने खेत में गया, जो धान की कटाई के लिए तैयार खड़ा था. यह उसकी बहुमूल्य कमाई थी, एक पूरे साल के उसके श्रम का फल था, साल भर जिंदा रहने का भोजन था!

उसने जलती लकड़ी से खेत को जलाया. धान धू-धू करके जल उठा. चिंगारियां, लपटों में बदलीं और ओजिसान के पूरे खेत में फैल गईं. सुनहरा धान, चंद मिनटों में काला स्याह हो गया. फिर धुएं का एक काला बादल ओजिसान के खेत में से आसमान की ओर उठा.



तडा आश्चर्यचकित हुआ और डरा भी. वो अपने दादाजी के पीछे-पीछे दौड़ा और चिल्लाया, “ओजिसान क्यों? ओजिसान! क्यों? – क्यों?”

पर ओजिसान ने कोई उत्तर नहीं दिया. उसके पास समझाने का समय ही कहाँ था. वो उस समय समुद्र के किनारे पर खड़े चार सौ लोगों की जान के बारे में सोच रहा था.

कुछ देर तो तडा पागलों की तरह जलते हुए धान को देखता रहा. उसके बाद वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा. वो दौड़कर घर में जाकर छिप गया. उसे लगा जैसे उसके दादाजी पगला गए हों.

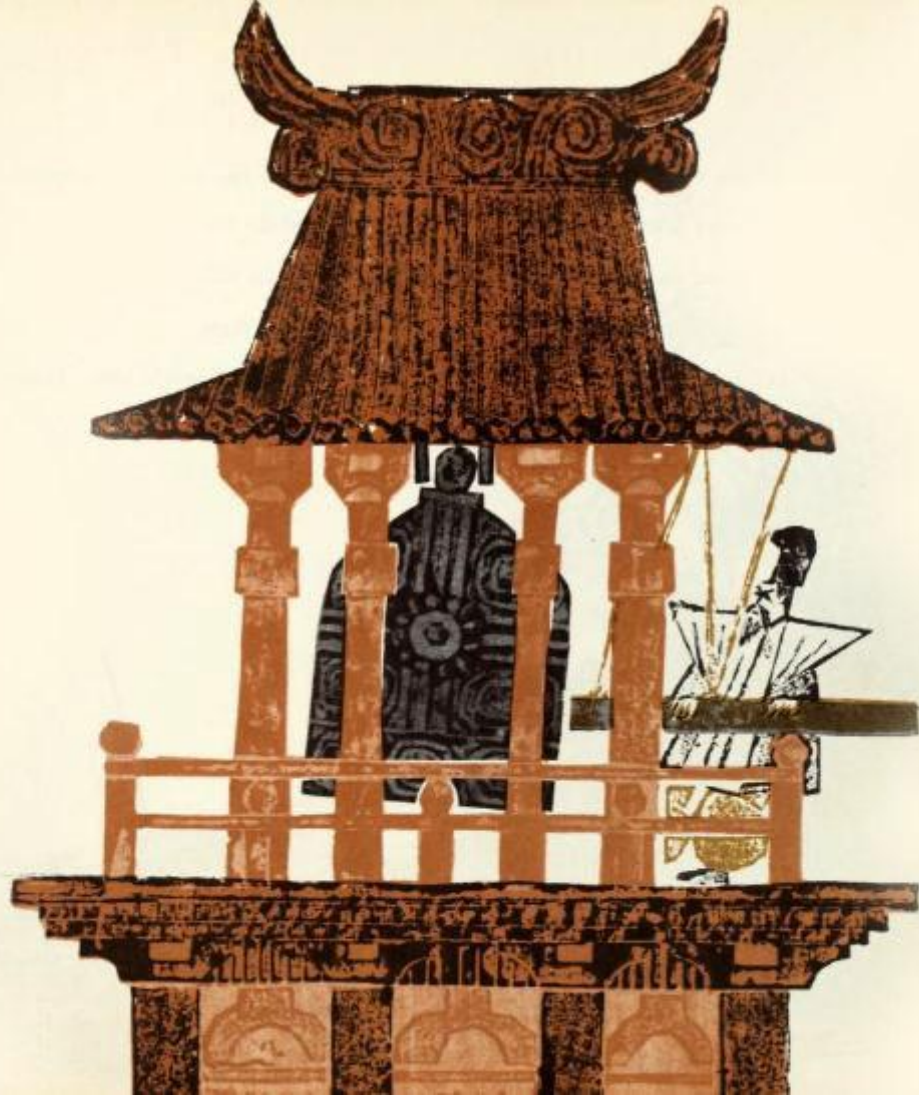
ओजिसान एक के बाद एक करके अपनी धान की क्यारियों को जलाता रहा. अंत में वो अपने खेत की आखरी क्यारी में पहुँचा. उसने आखरी क्यारी में जलती हुई लकड़ी फेंकी और फिर चुपचाप इंतजार करता रहा.



नीचे गाँव में मंदिर के पुजारी को पहाड़ पर जब आग लगी दिखी तो उसने जोर-जोर से मंदिर का घंटा बजाना शुरू किया. घंटे की आवाज़ सुनकर लोग समुद्र-तट से अपने गाँव की ओर चींटियों के झुंड जैसे भागे.

ओजिसान अपने जलते धान के खेत से, लोगों को भागते हुए देखता रहा. उसे एक-एक क्षण बहुत लम्बा मालूम पड़ रहा था.

“जल्दी दौड़ो! बहुत जल्दी दौड़ो!!” वो पहाड़ी के ऊपर से चिल्लाया. पर लोगों को उसकी आवाज़ सुनाई ही नहीं दी.



धीरे-धीरे सूरज ढल रहा था. अब खाड़ी ऊबड़-खाबड़ लग रही थी और समुद्र तेज़ी से दूर भाग रहा था.

ओजिसान के खेत में आग देखकर तब तक कुछ पड़ोसी आग बुझाने के लिए वहां पहुँच गए थे. पर ओजिसान ने दोनों हाथ जोड़कर उनसे आग न बुझाने की विनती की.

“धान को जलने दो!” ओजिसान ने कहा. “आग जलने दो! मैं चाहता हूँ कि नीचे से सभी लोग ऊपर पहाड़ पर आएँ. नीचे उनके लिए भयंकर खतरा है!”







धीरे-धीरे करके पूरा गाँव पहाड़ी पर चढ़ा – सबसे पहले युवा मर्द और लड़के, उसके बाद औरतें और तेज़ दौड़ने वाली लड़कियां। उसके बाद में बूढ़े औरत-मर्द आए। अंत में अपने बच्चों को पीठ पर लादे महिलाएं आयीं। बच्चे अपने साथ बाल्टी भर-भरकर पीने का पानी भी लाए। अब सबसे बूढ़े लोग भी उस ऊंचे पहाड़ पर चढ़ते हुए दिख रहे थे। पर ओजिसान के जलते खेतों को अब बचाया नहीं जा सकता था। सब लोग बूढ़े ओजिसान के चेहरे को दुखी अचरज के साथ देख रहे थे। फिर अँधेरा हो गया।



तडा घर में से दौड़ा हुआ बाहर आया. “दादाजी पगला गए हैं!” उसने रोते हुए कहा. “उन्होंने जानबूझ कर धान के खेत को आग लगाई. मैंने खुद उन्हें खेत में आग लगाते हुए देखा!”

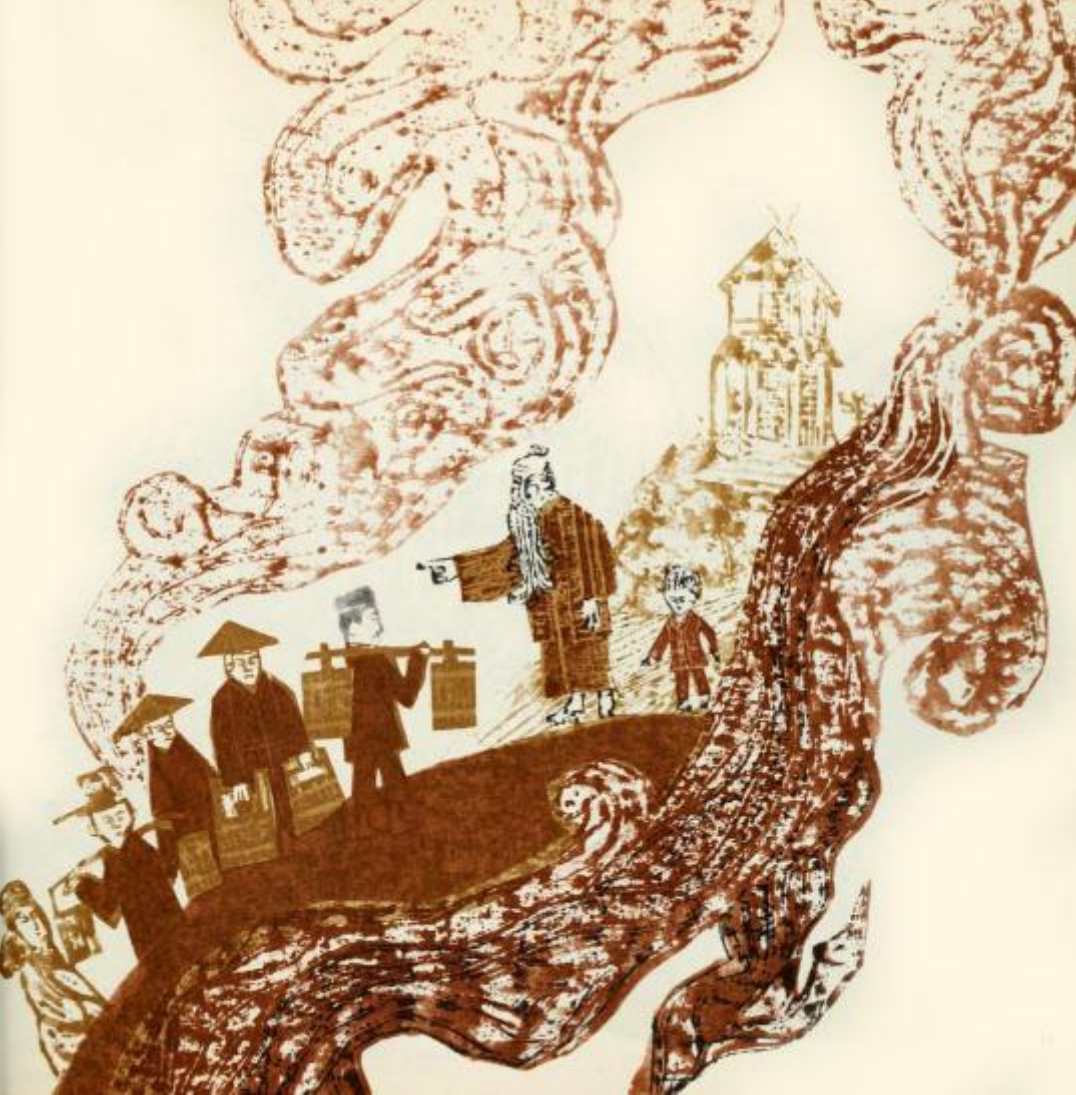
“यह बच्चा सच बोल रहा है. मैंने ही अपने खेत को आग लगाई थी,” ओजिसान ने कहा. “...क्या सब लोग यहाँ आ गए हैं?”

बाकी लोग काफी गुस्से में थे. “हाँ, सब लोग आ गए हैं,” उन्होंने कहा. पर लोग एक-दूसरे से कुछ फुसफुसाते रहे.

“यह बूढ़ा वाकई में पागल हो गया है. अपने खेत के बाद वो अब हमारे खेतों को भी आग लगाएगा.” लोग गुस्से में उत्तेजित होकर ओजिसान को अपनी मुठ्ठियां भींचकर धमकाने लगे.

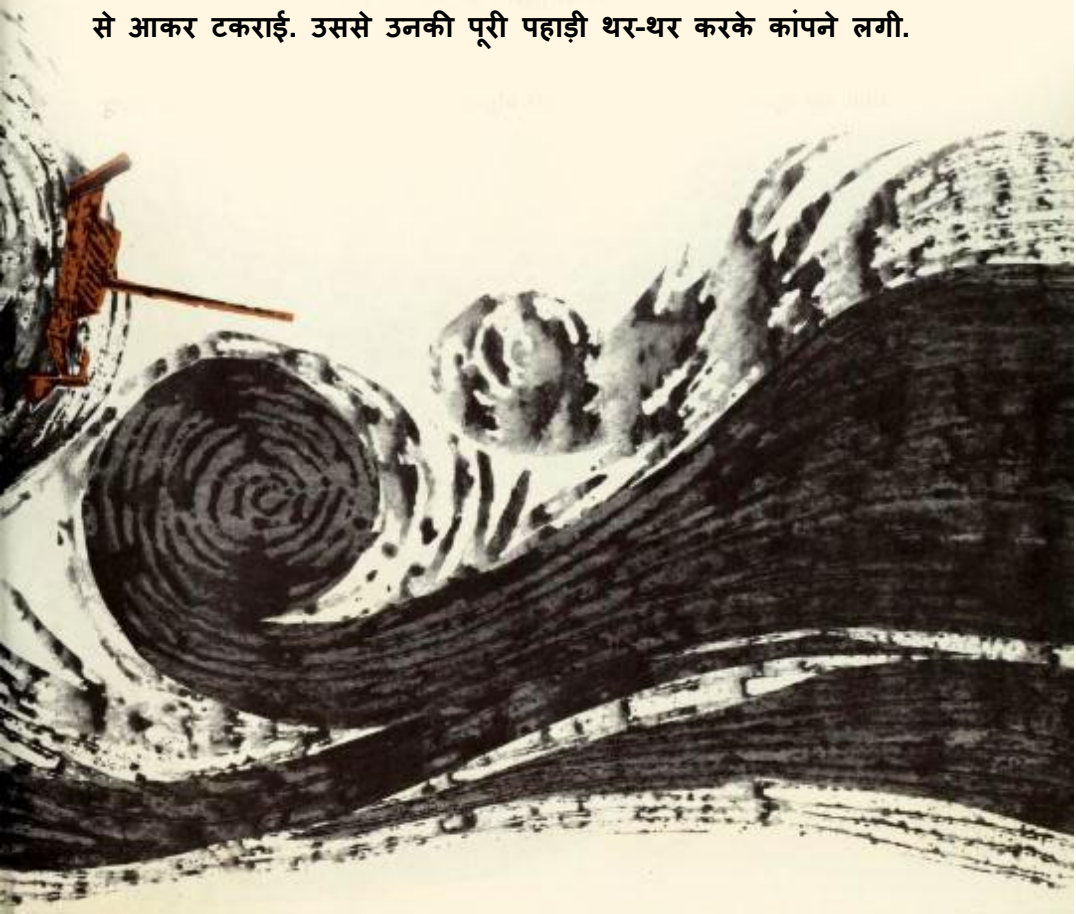
उसके बाद ओजिसान ने अपने हाथ का इशारा समुद्र की तरफ किया. “देखो!” उसने कहा.

चाँद की मंद रोशनी में लोगों ने जब समुद्र की ओर देखा तो उन्हें तट की परछाई दिखी, जहाँ पहले कुछ नहीं था. दूर से वो एक गहरे रंग की चौड़ी पट्टी नज़र आ रही थी. वो अँधेरी परछाई असल में वापिस आता हुआ समुद्र था. समुद्र की वो लहर एक चट्टान जितनी ऊंची थी और चील से भी अधिक तेज़ी से उनकी तरफ बढ़ रही थी.





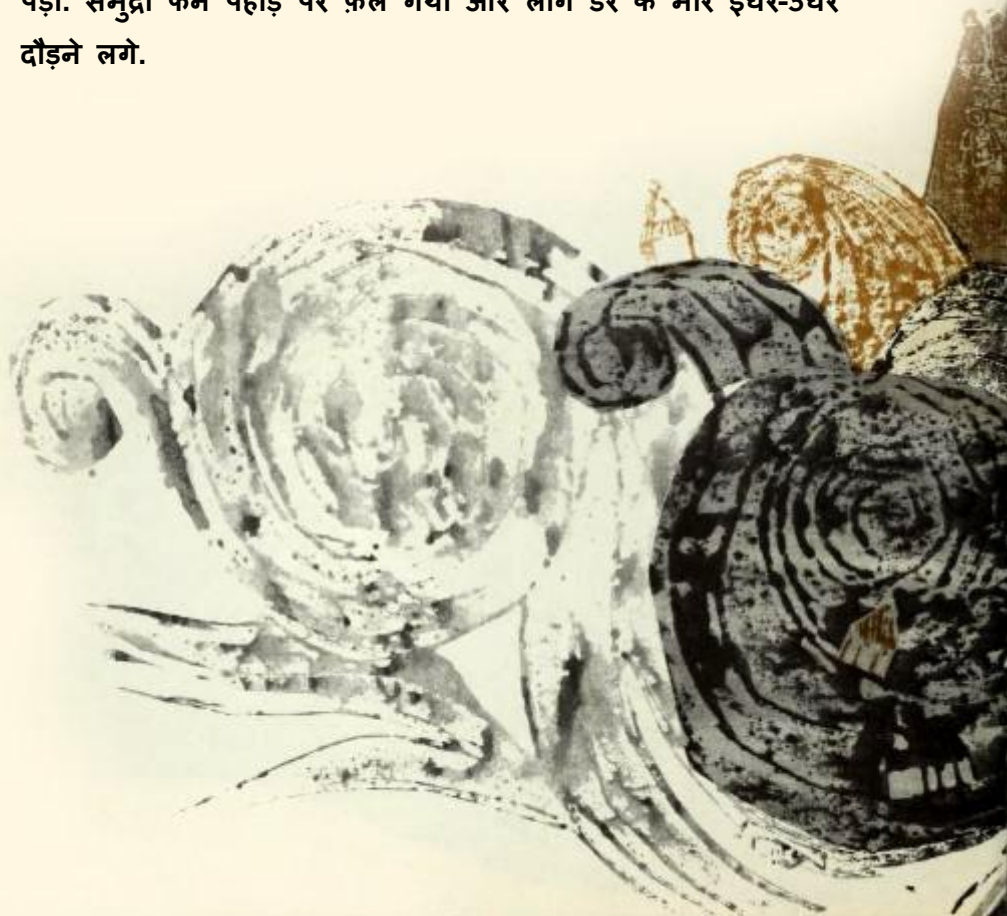
“ज्वार-भाटे की लहर!” लोग ज़ोर से चिल्लाए. उसके बाद सबका चीखना-चिल्लाना बंद हो गया. क्योंकि तब एक ऐसी धमाकेदार आवाज़ हुई, जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी. वो दैत्यकार ऊंची और भारी लहर उनके तट से आकर टकराई. उससे उनकी पूरी पहाड़ी थर-थर करके कांपने लगी.







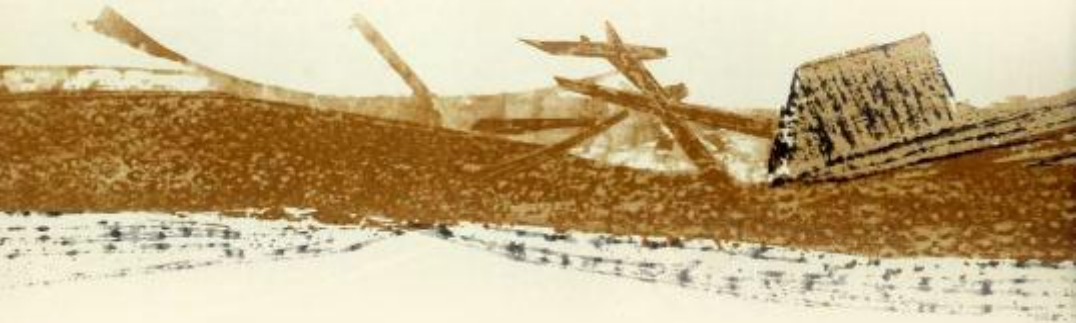
उसके बाद समुद्र का फेन बिजली कड़कने जैसे आसमान में उठा।
कुछ क्षणों बाद उस समुद्री फेन के अलावा वहां और कुछ दिखाई ही नहीं
पड़ा। समुद्री फेन पहाड़ पर फैल गया और लोग डर के मारे इधर-उधर
दौड़ने लगे।





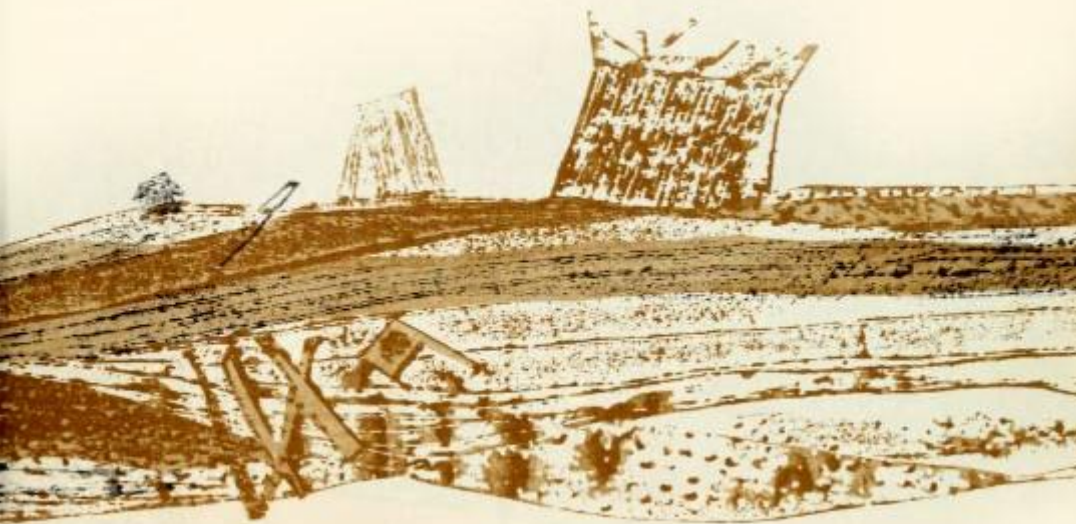
जब लोगों ने दुबारा नीचे देखा तो जहाँ कभी उनके घर थे वहाँ अब समुद्र अपना तांडव नृत्य कर रहा था. वो खूंखार समुद्र चीखता-चिल्लाता हुआ ज़मीन को भी निगलता गया. दो बार, तीन बार, पांच बार समुद्र ने अपना धावा बोला, पर हर बार उसकी तीव्रता पहले से कुछ कम थी. फिर समुद्र अपने पुराने स्तर पर वापिस चला गया. प्रचंड तूफान फिर भी गरजता रहा.

अब ओजिसान के घर के पास सब लोगों की जुबानें चुप थीं. किसी ने भी अपना मुंह नहीं खोला.



लोग पहाड़ के नीचे के पत्थरों को लुढ़कते-पटकते देखते रहे. उस समुद्री तूफ़ान ने गाँव के सभी घरों और मंदिर को ध्वस्त कर दिया था.

जहाँ कभी गाँव था वहाँ सिर्फ मिट्टी में धंसे कुछ बांस ही बचे थे. छतें अब समुद्र तट पर उल्टी और ओँधी पड़ी थीं. उसके बाद लोगों ने धीमी आवाज़ में ओजिसान को यह कहते हुए सुना, "इसलिए मैंने अपने धान के खेत को आग लगाई थी."

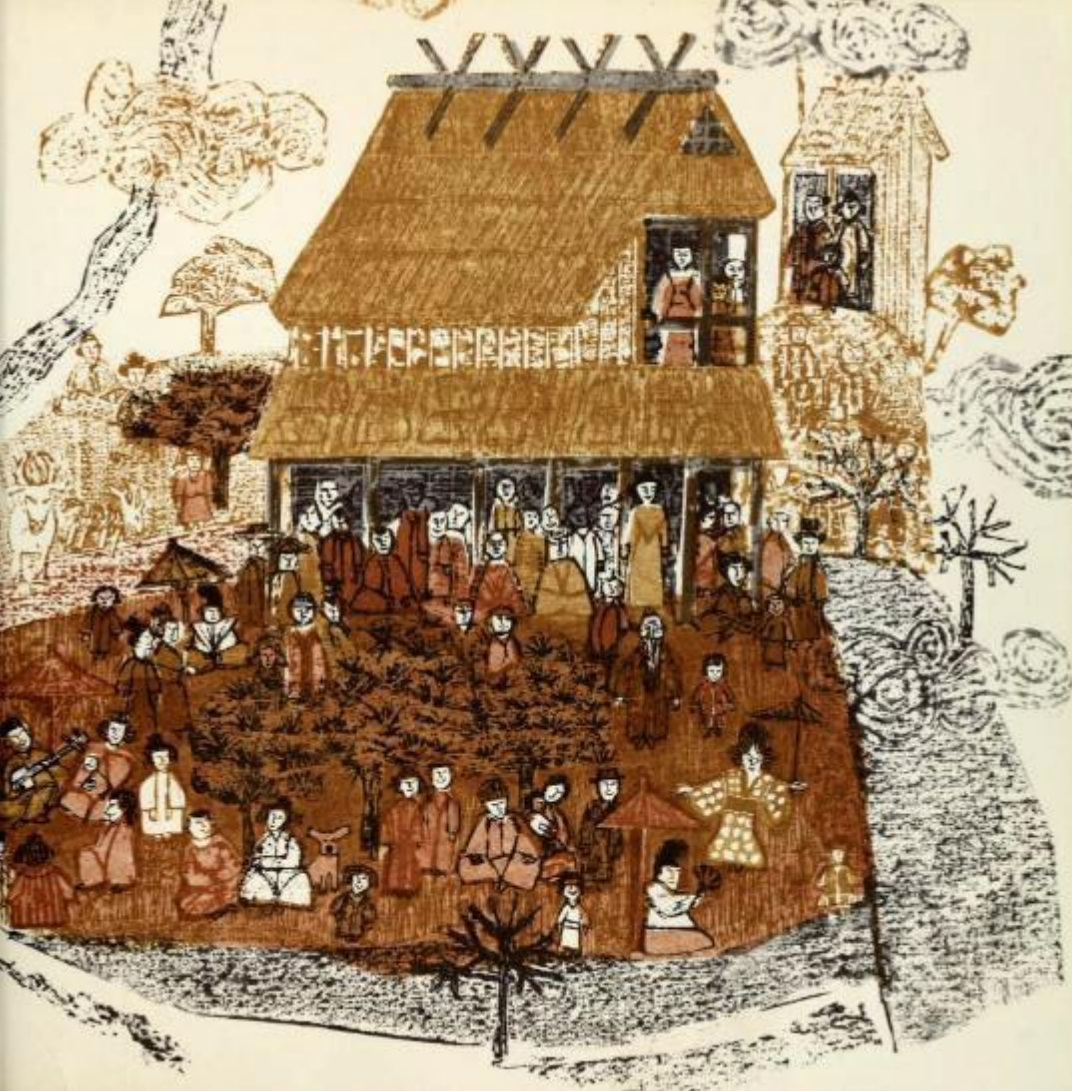


वो विवेकशील, बुद्धिमान बूढ़ा दोस्त, अपने पड़ोसियों के सामने खड़ा था. वो अब बिल्कुल निर्धन और गरीब हो गया था क्योंकि उसकी सारी दौलत और कमाई आग में स्वाहा हो चुकी थी. पर उसने चार सौ लोगों की ज़िन्दगी ज़रूर बचाई थी.

तडा दौड़कर अपने दादाजी के पास गया, और उसने कसकर उनका हाथ पकड़ा. हरेक परिवार का मुखिया, ओजिसान के सामने घुटने टेककर बैठा. उसके बाद बारी-बारी से बाकी लोगों ने भी ओजिसान का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया.

“मेरा घर अभी भी बचा है,” बूढ़े ओजिसान ने कहा. “बहुत से लोग उसमें रह सकते हैं.” और फिर वो आगे-आगे अपने घर में गया.





बाद में अच्छे दिन वापिस आए. पर लोग ओजिसान का एहसान कभी नहीं भूले. वो उसे दुबारा कभी धनी नहीं बना पाए. पर जब उन्होंने गाँव का पुनर्निर्माण किया तो वहां उन्होंने ओजिसान के सम्मान में एक मंदिर बनाया.

ओजिसान का मंदिर, लोगों के अनुसार आज भी खड़ा है. लोग आज भी उस बूढ़े ओजिसान को याद करते हैं जिसने अपने खुद का खेत को जलाकर ज्वार-भाटे की भयंकर लहर से उन्हें बचाया.







